[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3689
INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंगों का जीवन में रसात्मक रूझान

डॉ0 सुनीता
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, ललित कला विभाग, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी

रस–निस्पत्ति का सबसे उपयुक्त स्थान रंगमंच है, जहां अभिनेता विभिन्न भाव भंगिमाओं को अभिनित कर रस की भावों द्वारा निस्पत्ति करता है, और प्रेक्षक उसके अभिनय को देखकर पलभर के लिए उसी भाव में खो जाता है या डूव जाता है। यही अनुभूति सौन्दर्य अनुभूति कहलाती है। यद्यपि रस की विविध अनुभूति विभिन्न भावों द्वारा होती है। किन्तु इसका यह अर्थ नही है कि रस विभाज्य है, किन्तु वे एक ही अनुभूति के रंग विरंगे स्वरूप है। प्रकृति के विभिन्न रस के प्रतिक है। जीवन में खुशी, गम, विभिन्न परिस्थिति के अनुरूप रंग रस उपस्थित होता है। जैसे श्याम रंग श्रंगार का प्रतीक है। तो लाल रंग रौद्व और वीर रस का भूरा करूण रस का घोतक है तो काला भयानक का नीला वीभत्स का वर्ण है तो पीला अदभुत का रंगों के इस प्रतीकात्मक मर्म को पाश्चात्य कला मर्मज्ञ लारेन्स विनियन ने भी स्वीकारा है ''कुछ प्रकार के रंग सचमुच मस्तिष्क की भावनात्मक स्थितियों से वास्तविक सम्बन्ध रखते है।''भरत के मतानुसार आर्दश प्रेक्षक वही है जो नाट्य शाला में अभिनीत भाव के साथ तादात्म रखता है और कहां है ''सब बेकार है जप, तप करना मंत्रों का पढना माला जपना, साधना भक्ति करना, जब तक कि कोई रंगों के वास्तविक मर्म को अक्षरों के वास्तविक महत्व को आभाओं को और आकृतियों के गुणों को नहीं जान लेता।''भारतीय मनीषियों ने रस सौन्दर्य एंव आनंद को लगभग पर्याय माना है। जो जीवन में अति आवश्यक है। रस को अखण्ड, स्वप्रकाश, चिन्मय, बह्मनंद सहोदर की संज्ञा दी जाती है। अभिनव गुप्त ने भी रस को आनंद कहा है, जो वस्तुगत न होकर आत्मगत होता है।भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में रस की विस्तृत विवेचना की है इसके विश्लेषण और वर्गीकरण से इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि रस परमानंद की वह दशा है, जिसमें काव्य एवं चित्र द्वारा उत्पन्न स्वाभाविक आकर्षण और अन्तरिक अनुभूति से एक ऐसी स्थिति कों प्राप्त किया जाता है, जिसमें नियन्त्रित भावनाओं का सरस अभिव्यक्ति करण होता है। चित्रण में रस के आधीन ही भावाभि व्यक्ति होती हैं नाट्यशास्त्र में आठ रस, काव्य शास्त्र में नौ रस और चित्रकला में नौ से ग्यारह रसों तक का वर्णन मिलता है। विष्णु धर्मोत्तिर पुराण के चित्रसूत्र में काव्यशास्त्र में वर्णित नवरसों, श्रृंगार, हास्य, करूण, वीर रौद्र, भयानक, वीमत्स, अदभुद और शान्त का ही उल्लेख मिलता है।[1]शिल्पशास्त्र समरांगण सूत्रधार चित्रकला के क्षेत्र चित्रकला के क्षेत्र में ग्यारह रसों श्रृंगार, हास्य, करूण, रौद्र, प्रेय, मयानक वीर, प्रकाय, बीमत्स, अदभुत तथा शान्त को प्रस्तुत करता है।[2]समरांगण सूत्र धार की धारण श्री विष्णु धर्मोत्तर पुराण के चित्र सूत्र में वर्णित रसों से अधिक भिन्न नहीं है, क्योंकि उसमें भी रसों का आधार मुख्यतः चित्रसूत्र ही है।[3]

चित्रकला में श्रृंगार रस–श्रृंगार रस युक्त चित्रण में रतिभाव प्रधान रहता है तथा आकृतियों में आकषर्ण युक्त कान्ति एवं लावण्य–युक्त माधुर्य हुआ करता है ''आकृतियों की चितवन हाव–भाव, मुद्राओं, आलम्बन आलिंगन, चुम्बन, स्पर्श, बासना–प्रदर्शन आदि का स्पष्ट स्वरून मुद्रित किया जाता है।[4]'' इसे रस राज भी कहा जाता है।

हास्य रस–हास्य रस के चित्रण का स्थाई भाव ह्रास्य होता हैं। आकृतियां कुछ विचित्र सी चित्रित की जाती है। शरीर के अंगों में संतुलन नही होता है ऐसे चित्र हास्य और आनंद का संचरण करते है।[4] अपांग आदि को ललित एवं विकसित करने वाला तथा अधरों को स्फुरित करने वाला मृदु लीला सहित जो रस होता है। वह हास्य रस के नाम से पुकारा जाता है।[5]

करूण रस–करूण रस का चित्रण ''याचना, विनोद, शरणागत त्याग विक्री तथाकसन आदि में दयनीय की तरह दिखलायी पडता है।''[6]आसुओं से कपोल–प्रदेश को किलन्न करने वाला, शोक से आखों की संकुचित करने वाला और चित्र को संताप देने वाला, करूण रस कहलाता है।[7]चित्रण में आकृतियों के निरूपण में स्थिरता प्रस्तुत की जाती है। मुखमुद्रा पर शान्ति व दया और दृष्टि में याचना स्पष्ट रूप से दर्शायी जाती है। करूण रस का मूल रंग भूरा (कपोती माना गया है)

रौद्र रस–रौद्र रस के चित्रण में कठोरता, क्रोध, वध, हत्या, चमचमाते हुए शास्त्रों आदि का चित्रण होता है। चित्रसूत्र के अनुसार रौद्रसार रौद्ररस का चित्रण कठोर, विकार, क्रोध तथा हिसात्मक भाव से युक्त होना चाहिए।[8]इसमें गहरे और चमकते हुए रक्तवर्ण का बाहुल्य होता है।

वीर रस–वीर रस के चित्रण में प्रतिज्ञा, शूरता, उदारता तथा गर्व का भाव प्रदर्शित होना चाहिए।[9]
धैर्य, पराक्रम एवं वल को उत्पन्न करने वाला यह रस, वीर रस के नाम से प्रसिद्ध होता है।
इसमें गहरें रक्त वर्ण के साथ–साथ गहरे हरे रंग की भी योजना रहती है।

भयानक रस–भयानक रस के चित्रण में दुष्ट उन्मत, हिसंक और घातक प्राणियों को अंकित करना चाहिए।[10]भयानक रस का स्थायीभाव भय होने के कारण, इस चित्रण मे भंयकर आकृति आलत्बन (मुख्य आकृति) के रूप में निरूपित की जानी चाहिए।इसमें बहुत गहरे एवं काले रंग भी प्रधानता होती है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

वीभत्स रस–जिस चित्र में शमशान आदि के निन्दित दृश्यों, धात के साधनों एवं अन्य दारूण दृश्यों का अंकन किया गया हो, वह चित्र वीमत्स रस के लिए श्रेष्ठ कहा गया है।[11] असन्तुलित रेखाओं के साथ भद्दे और चितकवरे नीले रंग का प्रयोग देखने को मिलता है।

अदभुत रस–अदभुत रस का चित्रण विनय, रोमांच एवं चिन्ता से युक्त होता है तथा गरूड के मुख के समान झुका हुआ होता है।[12]

शान्त रस–सौम्य आकृतियों का ध्यान–धारण और आसनयुक्त मुद्रा में चित्रण, शान्त इस की प्रधानता है।[13]

इस चित्रण में शम स्थायी भाव होता है और आकृति का रूपविन्यास दैवीय गुणों के अनुकूल सजाया जाता है ऐसे चित्र इतनें तेजस्वी बनाने चाहिए कि उनके तेज के समक्ष दूसरा तेज फीका पड जायें। उनके आभूषणों की कांन्ति भी निजी कांन्ति के ही अनुरूप होनी चाहिए।[14] विकारहीन शान्त एंव प्रसन्न नेंत्रों तथा वदन आदि की वैराग्य के आधीन शान्तिपूर्ण स्थिति में ही शान्त रस सम्भव हैं इस प्रकार के चित्रण में नीले रंग की प्रधानता होती है तथा आकृतियों में साधुसन्तों का चित्रण होता है।भारतीय चित्रकला में वर्ण विन्यास का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है क्योंकि रंगों का चित्राकृति की स्वाभाविक प्रवृतियों से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। रेखाओं की अपेक्षा रंग दर्शकों को अधिक प्रभावित करते है और ये भावों की एक लम्बी श्रृंखला को उभार कर चित्र में रस स्थिति को जन्म देते है जिसे भावों पर आधारित रस चित्रण कहा जा सकता हैं भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र मे प्रत्येक रस का सम्बन्ध एक विशेष रंग से स्थापित किया है।[15]

इस प्रकार रस अभिव्यक्ति मे रंग–विशेष का महत्वपूर्ण स्थान है। अतः रस–चित्रण में वर्ण विन्यास के प्रयोग पर अधिक बल दिया गया है। क्योंकि मानसोल्लास में रस चित्रण को वर्ण पर ही आधारित वतलाया गया है।[16]भारतीय चित्रकला में अभिव्यक्ति–कौशल का महत्वपूर्ण तत्व वर्णविधान ही है। वर्ण ही विभिन्न भावों के सम्बन्धों को व्यक्त करते है और भावों का सृजन भी करते है। यहां के चित्रण में रंग विधान बहुत ही सरल एंव स्वाभिक है, जो प्रसगानुकूल भी है। प्रायः रंगो का प्रयोग एक क्रमिक आधार पर ही किया गया है। आवश्यकता अनुसार उनमें विविधता भी है।[17]रेखाओं की तरह रंगो का भी भिन्न–भिन्न स्परूप होता है रंगो के विभिन्न स्वरूप भावाव्यक्ति की भिन्नता के आधार पर देखने को मिलते है। चित्रण की रंग योजना, रूपनिर्माण (पर्सपेक्तिव) और जीवन छनद के प्रयोजन में अंकित आकृतियों को उज्जबल वर्ण की और पृष्ठभूमि में अंकित आकृतियों को गहरे वर्ण की दिखाकर समीक्षा और दूरी के सिद्धांत को वर्णो के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। भारतीय चित्रकला की रंग योजना विष्णु धर्मोत्तर पुराण के अनुसार ही दिखलाई पडती है और चित्रों मे विभिन्न रंगों, श्वेत, पीले, नीले, हरे आदि का प्रयोग किया गया है।[18]यहां की चित्रकला में रगों का प्रयोग भावानुकूल किया गया है जो कि विभिन्न रसों के सृजन मे सफल सिद्ध होते अतः रंगो का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि विभिन्न रंगो के प्रभाव मानव की मानसिक भावनाओं को उद्वेलित करने की क्षमता रखते है।

संदर्भ –

1 *चित्र सूत्र 3.40.16.18*
2 *श्री विष्णु धर्मोत्तर पुराण, चित्रसूत्र–3.43*
3 *स्मरांगण सूत्रधार–2 अध्याय–55 श्लोक–2*
4 *डॉ0 रायकृष्ण दास भारत की चित्रकला प्र0 26*
5 *वाचस्पति गैरोला, मा0 चित्रकला प्र0 54*
6 *भरतमुनि नाट्यशास्त्र 6/42–43*
7 *मनसोल्लाम 3.42*
8 *डॉ0 रामकृष्णा दास, भारत की चित्रकला प्र0 14*
9 *विष्णु धर्मोत्तर पुराण, चित्रसूत्र, 3.43.7*
10 *विष्णु धर्मोत्तर पुराण, चित्रसूत्र, 3.38.15*
11 *विष्णु धर्मोत्तर पुराण, चित्रसूत्र, 3.43.9*
12 *विष्णु धर्मोत्तर पुराण, चित्रसूत्र, 3.43.10*
13 *कायस्पति गैरोला, भारतीय चित्रकला प्र0 54*
14 *समरागण सूत्रधार–2 अध्याय–55 श्लोक 5*
15 *विष्णु धर्मोत्तर पुरार्ण चित्रसूत्र 3.43.4.*
16 *समरागण सूत्रधार, अध्याय 55 श्लोक 6*
17 *विष्णु धर्मोत्तर पुराण चित्रसूत्र 3.43.5*